भगत कबीर – सबद १७
असथावर जंगम कीट पतंगा ॥
रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२५

असथावर जंगम कीट पतंगा ॥
अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥१॥
ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥
जब हम राम गरभ होइ आए ॥१॥ रहाउ ॥
जोगी जती तपी ब्रह्मचारी ॥
कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥२॥
साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥
राम रसाइनु रसना पीवहि ॥३॥
कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥
हारि परे अब पूरा दीजै ॥४॥१३॥

सार: चाहे कैसी भी स्थिति हो, मार्ग धार्मिक हो या आध्यात्मिक, सभी यात्राएँ तभी सच्ची और सार्थक हो सकती हैं जब वह अहंकार से ऊपर उठें। यदि यह केवल विश्वासों के निरर्थक दोहराव वाली प्रक्रिया या व्यक्तिगत अहंकार की गर्व में फंसी हो तब वह निराशाजनक और अधूरी हो सकती हैं। सच्चे साधक ज्ञान का संचय करने या पहचान बनाने के पीछे नहीं भागते, वह सच्चाई को समझने और अनंत पूर्णता को अपनाने के लिए समर्पित होते हैं। उनकी खोज विनम्रता में निहित, अपनी आत्म-छवि को त्यागने और इस सत्य में विलीन होने की इच्छा होती है कि सभी अलगाव केवल भ्रम है। जागरूकता हमें पूर्णता की अवस्था की ओर ले जाती है, यह जागृति उस शाश्वत पूर्णता की प्राप्ति लाती है जो कभी अनुपस्थित नहीं थी केवल भुला दी गई थी।

असथावर जंगम कीट पतंगा ॥
जड़ वाले पेड़-पौधे, भ्रमण करते जानवर, रेंगने वाले कीड़े और पंख वाले कीट, हमारी विभिन्न मानसिक अवस्थाओं का प्रतीक हैं।

अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥१॥
मैंने अनगिनत जीवनों को विविध रंगों में अनुभव किया है जो पहचान, विश्वास और व्यवहार के मूर्त रूप हैं। यह हमारी विभिन्न मानसिक अवस्थाओं का प्रतीक हैं जो हर परिस्थिति के साथ बदलते रहते हैं, स्थायी नहीं रहते हैं। (१)

ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥
मैं ऐसे कई घरों में रहा हूँ जो लाक्षणिक रूप से हमारे विचारों और भावनाओं की विभिन्न अवस्थाओं का प्रतीक हैं।

जब हम राम गरभ होइ आए ॥१॥ रहाउ ॥
जब तक मैं इस दिव्य गर्भ में गर्भित नहीं हुआ, जो जागरूकता के पवित्र स्थान का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ एकता का पोषण होता है। (१)(विराम)

जोगी जती तपी ब्रह्मचारी ॥
मैंने ब्रह्मचर्य का पालन किया, तपस्या की और साधना की है। यह दर्शाता है कि मैंने ज्ञान की खोज में विविध मार्गों को अपनाया है।

कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥२॥
कभी मैं एक राजा होता हूँ, शाही छत्री वाला और कभी एक भिखारी, जिसके पास कुछ भी नहीं। यह द्वैत दर्शाता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण से समृद्धि आती है जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण से अभाव की भावना उत्पन्न होती है। (२)

साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥
अज्ञानी आध्यात्मिक मृत्यु का सामना करते हैं जबकि ज्ञानी प्रबुद्ध व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से जीवित रहता है।

राम रसाइनु रसना पीवहि ॥३॥
सर्वव्यापी शक्ति के सार का चिंतन करते हुए वह एकता की आनंददायक स्थिति को आत्मसात कर व्यक्त करते हैं। (३)

कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥
कबीर कहते हैं, हे सर्वव्यापी चेतना कृपा कीजिए।

हारि परे अब पूरा दीजै ॥४॥१३॥
निराश हो कर, मैं पूरी विनम्रता के साथ सारा अभिमान त्याग देता हूँ और उपहार की कामना करता हूँ। यह प्रार्थना उस साधक की अभिव्यक्ति है जो अहंकार और द्वैत से निराश होकर अब एकता के लिए पूर्णता की तलाश में है। (४)(१३)

तत्त्व: भगत कबीर सजीव उदाहरणों के माध्यम से समझाते हैं कि कैसे सृष्टि के अनगिनत रूप, जैसे जड़िले पौधे, घुमंतू जानवर, रेंगने वाले जीव और पंख वाले कीट, यह सृष्टि के अनगिनत रूप हमारी चेतना के विभिन्न क्षेत्रों को दर्शाते हैं। अनेक जन्म और रंग हमारी निरंतर बदलती पहचान, विश्वास और भावनात्मक प्रतिमानों के प्रतीक हैं। अनेक घर हमारे अहंकार के रूप हैं, कई घर अहंकार के विभिन्न रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आंतरिक प्रभावों और बाहरी परिस्थितियों से निर्मित होते हैं और वास्तविक भी लगते हैं परंतु क्षणभंगुर हैं। हमारे मन का द्वैत इन भ्रमों का पीछा करता है निरंतर आत्म-संरचना और विनाश करता रहता है। परंतु सभी परिवर्तनों के पीछे एक स्थायी वास्तविकता निहित है - शुद्ध चेतना, शाश्वत, निराकार और सर्वव्यापी। भगत कबीर हमें दिखावे से परे, इस अपरिवर्तनीय सच को पहचानने और एकत्व की शांति की ओर लौटने का आग्रह करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com